रात्रि क्लास 7/6/1966 ओम्
घर में भी रहते हैं फिर यहाँ आकर भी रहते हैं। फर्क बहुत है। यहाँ तो मुरली सुन वहाँ ही घर में रहते हैं। यहाँ आते हो धारणा करने लिए, फिर धारणा करानी है। अपने से पूछना है हमने कोई बुद्धिहीन, अंधे (को) रास्ता बताया। जब तक बच्चियाँ यह सर्विस नहीं करेंगी, काँटो को फूल नहीं बनावेंगी तो ब्राह्मण कैसे कहलावेंगे। ब्राह्मणों का काम है शूद्रों को ब्राह्मण बनाना। क्रिश्चियन लोग हिन्दू को क्रिश्चियन बनाते हैं। तुम्हारा फिर धर्म है शूद्र को ब्राह्मण बनाना, जो फिर ब्राह्मण से देवता बने। जब तक ब्रह्मा ना बना है तो देवता नहीं बन सकते। ब्राह्मण हैं पक्के वैष्णव। वो जो वल्लभाचारी लोग हैं वो कोई वैष्णव नहीं हैं। भल वेजीटेरियन हैं; परन्तु वैष्णव उनको कहा जाता जो विष्णुपुरी का मालिक बनने पुरुषार्थ करते हो। वो कोई विष्णुपुरी का मालिक बनने पुरुषार्थ नहीं करते। वैष्णव सिर्फ विष्णुपुरी के देवताओं को कहा जाता है। नाम बहुत रखा है। वैष्णव लोग कृष्ण के मंदिर को सम्भालते हैं। वल्लभाचारी कुल के नॉनवेजीटेरीयन को छूने भी नहीं देते। विकारी भी रहते हैं। सिर्फ मंदिर के बड़े हैं। उस बात में अपने को वैष्णव समझते हैं। किसको छूने भी नहीं देंगे। वास्तव में तुम ब्राह्मण कुल भूषणों को कितना नशा रहना चाहिए। हम ईश्वरीय कुल के हैं। ईश्वर हमारा डाडा है। ब्रह्मा के हम बच्चे हैं। हम ईश्वर की फैमली के हैं। तुम मात–पिता... तो फैमली हो गई। ईश्वरीय कुटुम्ब कहा जाता। तुम ईश्वरीय कुटुम्ब के हो। और सब हैं आसुरी कुटुम्ब के। वो ईश्वर को जानते ही नहीं। तुम रात–दिन बाबा कह याद करती हो। तुम बहुत ऊँच कुल की हो। तुम ब्रह्मा की औलाद बहुत ऊँच कुल की हो। तुम्हारी बुद्धि में मूलवतन और विष्णुपुरी है। विष्णुपुरी में जावेंगे तो वहाँ बाप और घर (मूलवतन) ..... नहीं होगा। यह सिर्फ अभी तुमको याद है। बादशाही में यह याद नहीं रहती। इस समय तुमको सब कुछ याद रहता है। शिवबाबा को बहुत कहते हैं– बाबा, आप जानी–जाननहार हो। हमारे अंदर को जानते हो। बाबा कहते, (मैं कोई के) अंदर को नहीं जानता हूँ। मुझे क्या पड़ा है तो इतने सबका बैठ यह ख्याल करूँगा। मैं हूँ ही पतित–पावन। आता हूँ तुमको श्रीमत देने कि मुझे याद करो। यह ना समझना चाहिए शिवबाबा तो जानी–जाननहार है। बा(बा) तो कल क्या होगा वो भी नहीं जानते। अगर जानते तो बता देते। हम पूछते हैं यह सख्त बीमार है, क्या होगा, बताओ जीएगा या मरेगा। बाबा कहते हैं यह मैं नहीं जानता। फिर तुम तो यह घड़ी–2 पूछते रहेंगे। रचता–रचना को (जा)नना है। वो तुमको रचना की आदि–मध्य–अंत का नॉलेज देते हैं। बहुत होंगे जो विकार में जाते होंगे और क्लास में आते होंगे। इस इंद्र की सभा में कोई भी विकारी को ब्राह्मणी ले आती होगी तो दोनों को बहुत कड़ा दण्ड पड़ जाता है। पारस बुद्धि बनने का पुरुषार्थी फिर ऐसा कोई काम करते हैं तो पत्थरबुद्धि बन पड़ते हैं। इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाते हैं। क्यों लाया। ब्राह्मणों को बड़ी सम्भाल से लाना चाहिए। नहीं तो बिल्कुल चढ़ नहीं सकेंगे। कुछ पा ना सकेंगे। विकार में जाता होगा, उनको ब्राह्मणी ले आई तो दोनों पापात्मा बन पड़ते। बाप कहते हैं मैं युक्ति बताता हूँ पावन (कैसे) बनो। अगर भूल करेंगे तो सौणा दण्ड पड़ जावेगा। दुर्गति को पा लेंगे। दण्ड देने वाला धर्मराज है। उनकी डिपार्टमेंट अलग। बाबा किसको सज़ा नहीं देते। यह धर्मराज की डिपार्टमेंट है। योग लगाओ तो पाप भस्म होंगे। बाकी मैं क्षमा कुछ भी नहीं करता हूँ। जो करता है वो पाता है। बाबा साफ कहते हैं। तुम बुलाते हो ही पतित–पावन आओ। तुमको बहुत सिम्पल बात समझाते हैं। पतित से पावन होने का रास्ता ही एक है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। अगर फिर विकर्म करेंगे तो और ही ज्यादा सज़ा खानी पड़ेगी। पतित राजधानी में भी साहुकार–गरीब हैं। स्वर्ग की है पावन राजधानी। उसमें भी साहुकार भी हैं, गरीब भी हैं। बाप को अच्छी रीत याद करते रह(ना) हैं। सबूत देना है कितने को समझाया। प्रजा बनती जावेगी। प्रजा में भी ऐसे निकलते हैं जो आपसामन बनाते हैं। भारत में भी देवताओं के पुजारी बहुत बुद्धिवान थे। रावण ने पत्थरबुद्धि बना दिया है। बाप समझाते हैं गीता सुनाने वालों पास जाकर बैठो।

(अखबार) में पड़ा था। उनको लिख सकते हैं कि जो पहला शंकराचार्य था वो भी गीता को नहीं जानता था। गीता का रचता कौन है वो भी नहीं जानते थे; परन्तु ऐसे कोई .... फट से जवाब नहीं देते। सर्विस के शौक वाले अखबार भी पढ़ सकते हैं। गीता का उपदेश देने वाला देख झट लिखो यह गीता को बिल्कुल नहीं जानते। गीता का भगवान कौन है यह भी नहीं जानते। भगवान तो ज्ञान का सागर है। झूठी गीता पढ़ने से मनुष्य पतित बन पड़े हैं। फिर पतित–पावन बाप ही आए सबको पावन बनाते हैं। शिमले में नैनीताल में प्रदर्शनी हुई, लिखते हैं इतने ..... हैं लिखवाए कर लिया। कोई ने अच्छी रीत नहीं (लिखा)। वो हमारा बाप है, जिससे 21 जन्म का वर्सा मिलता है। बाप गीता का भगवान है। सर्वव्यापी नहीं है। ब्रह्मा द्वारा 21 जन्म का वर्सा शिवबाबा दे रहे हैं। यह बुद्धि में (पक्का) नहीं करती है। इतनी ब्रह्माकुमारियाँ सब उनसे वर्सा ले रही हैं। निश्चय बैठ जाए तो मिलने बिगर ..... भी ठहर ना सके। तुम बच्चे बाप को याद करने बिगर रह ना सको। बाप के साथ बहुत प्यार चाहिए, बहुत योग चाहिए। तब तुम सर्विस कर सकते हो। बोलो, बेहद का बाप स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं। तुम माताओं को खड़ा होना है। तरस पड़ना चाहिए। मंदिरों में बिचारे जाते हैं। उनको बताना चाहिए यह कौन है। तुम बच्चों को दर–2 भटकना नहीं है। रास्ता बताना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। बाप का परिचय देते रहो। चक्कर को और बाबा को याद करो तो बेड़ा पार हो जावेगा। बाप सर्वव्यापी नहीं है। बाबा बेहद का बाप है। पतित–पावन है। वो ही आकर पावन दुनिया बनाते हैं। वह याद रहना चाहिए। तो सदैव खुशी में रहेंगे। तुम्हारी खुशी का कोई अंत पा ना सके। बाप कहते हैं मुझे याद करो। चक्कर तो बहुत सहज है। भक्तिमार्ग है रात। ज्ञानमार्ग है दिन। अभी तुम रात से दिन में जाते हो। तुम पत्थर के पर्वत को फेंक सोने का पर्वत स्थापन कर रहे हो। गोवर्धन पर्वत की बहुत पूजा होती है। फेरी पहनने की तो दरकार नहीं। ना तुम .... पर उठाते हो। हाँ, तुम कंगाल भारत को सिरताज बनाते हो। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ सब भूल जाओ। मुझे और रचना के आदि–मध्य–अंत को जानो। पवित्र .... बाप को याद करो तो भूले–चुके खतम हो जावेगी। ..... आदि की तो कोई बात ही नहीं। गुनाह तो .... कल्प किए है। बता नहीं सकते। तुमको सज़ा माफ करानी है तो तुम याद करते रहो। आशीर्वाद करने की बात नहीं। यहाँ की रसम–रिवाज़ दुनिया से न्यारी है। इसलिए कहते हैं– बाबा, तुम्हरी गत–मत तुम ही जानो। कोई भी गुरु–गुसाई से वा शास्त्र से सद्गति हो नहीं सकती। कोई भूल करते हैं तो कहता हूँ तुम तो भक्त . ...। स्वर्ग में कब कोई से भूल नहीं होती। बाप कहते हैं किसको भी दुख नहीं देना है, नहीं तो धर्मराज के (डंडे) खावेंगे। इसलिए कब भी किसको दुख नहीं देना है। बाप सुख देने आते हैं। दुखहर्ता–सुखकर्ता है। तो तुमको दुखकर्ता थोड़े ही बनना है। शिवबाबा की याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गीता में लिखा हुआ है लड़ाई के मैदान में जो मरेगा स्वर्ग में चला जावेगा। यह समय है स्वर्ग जाने का। बाकी तो कोई स्वर्ग में जाता नहीं है। यह है अंतिम समय; इसलिए कहा जाता है शिवबाबा को याद करो तो तुम स्वर्ग में चलेंगे। अपन को बचाना है। यह जीवन बहुत अमूल्य है। बीमारी आदि से तंग नहीं होना है। शिवबाबा को याद करते रहेंगे तो जन्म–जन्मांतर के पाप कटते जावेंगे। शिवबाबा की याद में मर जाए तो कितना फायदा है। यह है समय स्वर्ग में जाने का। नर्क खतम हो जाना है। जितना हो सके बाप को याद करना है। विकार में गया खतम। तुम बच्चों को पाप से बहुत डरना है। उसमें भी विकार से बहुत बचना है। काम महाशत्रु है। कर्म–इन्द्रियों से पाप नहीं करना है। माया बहुत तंग करेगी। भागना नहीं है। यहाँ बहुत मेहनत है। इस ज्ञानमार्ग (में) कब सा० की आस नहीं रखनी है, नहीं तो ज्ञान कब उठा नहीं सकेंगे। भोग ले जाती हैं उनकी भी संभाल रखनी है। इससे फायदा कुछ नहीं; परन्तु भोग की रसम–रिवाज है तब जाती हैं। इन बातों से फायदा नहीं है। फायदा है बाप और सृष्टि चक्कर जानने में। (कब) भी

7/6/1966

ख्याल ना करना सा० हो। ज़रा भी फायदा नहीं है। कोई आशाएँ ना रखो। नुकसान ही है। आँखे बंद करके भी नेष्टा में नहीं बैठना है। माया विघ्न बहुत डालेगी। कोशिश कर याद में रहना है। अल्प को और वर्से को याद करना है। चक्कर को जानना तो बहुत सहज है। सिर्फ बाप का फरमान है मुझे याद करो। बाप आते ही तब हैं जब पावन दुनिया की स्थापना, पतित दुनिया का विनाश होना है। पतित–पावन बाप पावन दुनिया स्थापन कर रहे हैं। बच्चों को राजयोग सिखाते हैं। यह समझने की बातें हैं। बाप को याद करना यह शिवबाबा की नौकरी है। याद से तुम वायुमण्डल शुद्ध बनाते हो। यहाँ इस ही धंधे में लगे रहो। यहाँ तुमको जमा बहुत होगा। बहुत–2 फायदा होगा। इतना जमा करना है 21 जन्म तुम खाते रहेंगे। यह है सच्ची कमाई। अच्छा, गुडनाइट। ओम।